रिकॉर्डः– इस पाप की दुनिया से.... ॐ पिताश्री 21/7/1965

ओम् शान्ति। बच्चे अब समझ में आए हैं अर्थात् समझदार बने हैं। तो ज़रूर पहले बेसमझ थे। यह कौन कहते हैं? समझदार बनाने वाला बाप कहते हैं और बच्चे फील करते हैं हम कितने बेसमझ थे। यह भी समझ में नहीं आता कि यह पतित दुनिया है और इसी भारत में जब देवी–देवताओं का राज्य था तो पावन सुखी थे। उसमें कब दुख की बात नहीं थी; परन्तु शास्त्रों में कैसी–2 बातें सुनने कारण यह भी निश्चय में नहीं आता कि स्वर्ग में सदैव सुख था। स्वर्ग का किसको पता नहीं। समझते हैं, वहाँ भी दुख था, ये था। यह है बेसमझ। अभी तुम बच्चे समझ में आए हो। बाप ने आकर समझाया है। उनकी श्रीमत पर तुम चल रहे हो। मनुष्य आसुरी मत पर चलने कारण समझते नहीं। उनको रावण मत वा राक्षस मत कहते हैं। गाते भी हैं यह पतित दुनिया है। स्वर्ग पावन दुनिया थी। पावन दुनिया में भी दुख हो फिर तो दुख की ही दुनिया हुई। फिर गीत भी रॉंग हो जाता। कहते हैं– हे बाबा! ऐसी जगह ले चलो, जहाँ आराम, सुख हो। बच्चे यह भी जानते हैं स्वर्ग सोने की चिड़िया थी, देवी–देवताएँ थे, कभी भी एक/दो को दुख नहीं देते थे। गाते भी हैं फिर भी शास्त्रों में ऐसी बातें, ऐसी बातें लिखी हैं जो समझते हैं यह परम्परा से चला आता है। कृष्ण पर भी झूठे कलंक लगा दिए हैं। कहा जाता है जैसी पतितों की दृष्टि वैसी सृष्टि समझ में आती है। समझते हैं सारी सृष्टि ही पतित है। इस समय उन्हों की दृष्टि ही पतित है। तो सारी सृष्टि को पतित समझते हैं। समझते हैं परम्परा से यह पतित पना चला आता है। अभी तुम बच्चों में समझ आती जाती है, सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। प०पि०प० के बच्चों को डायरैक्शन मिलते हैं। आत्माओं को बाप बैठ समझाते हैं। सब आत्माएँ पतित हैं; इसलिए पतित आत्मा, पुण्य आत्मा कहा जाता है। बाप आत्माओं से बैठ बात करते हैं। तुम हमारे अविनाशी बच्चे हो। फिर मम्मा–बाबा भी कहते हो। इस दुनिया में किसको भी पिताश्री नहीं कह सकते। श्री यानी श्रेष्ठ। एक भी मनुष्य श्रेष्ठ है नहीं। यह तो एक की ही महिमा हो सकती है। यहाँ सब भ्रष्टाचार से ही पैदा होते हैं; इसलिए श्री कह नहीं सकते।

.....

अभी हम फरिश्ता बनने वाले हैं। चलते–2, श्रेष्ठ (बनते–2) झट माया रावण थप्पड़ लगाए और भ्रष्ट (बना) देती है। भ्रष्ट को श्री कह नहीं सकते। श्री ल०, श्री ना०, श्री कृष्ण कहते हैं। मंदिरों में भी उन्हों की ही जाए महिमा गाते हैं। अपन को श्रेष्ठ कह नहीं सकते। अभी (तुम) बच्चों ने समझा है भारत श्रेष्ठ था। वहाँ मूत पलीती नहीं थे, शुद्ध श्रेष्ठ थे। बाप की महिमा है ना– मूत पलीती कपड़ को धोकर ..... कर देते हैं। फिर उनको मूत पलीती भ्रष्ट कह नहीं सकते। भ्रष्टाचार का अर्थ कितना बड़ा है। वो लोग भ्रष्टाचार को श्रेष्ठ बनाने लिए सभाएँ बनाते हैं; परन्तु सभा (तो) भ्रष्टाचारियों की हैं, तो कोई को श्रेष्ठ (ब)ना कैसे सकते? बिल्कुल ही बेसमझ हैं। भ्रष्टाचारी तो सारी दुनिया है; परन्तु समझते नहीं हैं। बरोबर है भी रावण राज्य। जिस कारण रावण को वर्ष–2 जलाते हैं। जलता ही नहीं, फिर भी खड़ा हो जाता। यह भी मनुष्यों को समझ नहीं आती जबकि जलाते हैं फिर हम नया क्यों बनाते हैं? इससे सिद्ध होता है रावण राज्य गया नहीं है। स्वर्ग में जब राम राज्य होता है वहाँ तो एफिजी निकालेंगे नहीं। कहते हैं रावण को जलाया, फिर लंका को लूटा। सोना ले जा... है घर में। रावण की लंका सोनी बनाते हैं; परन्तु ऐसा है नहीं। यह तो सारी दुनिया लंका है। रावण राज्य में (स)ब है। यह आइलेंड(टापू) है ना। दिखलाया भी है लंका भारत की पुछड़ी है; परन्तु सिर्फ इस पुछड़ी (में) तो रावण राज्य नहीं है ना। रावण राज्य तो सारी वर्ल्ड पर है। यह भी तुम समझते हो। कॉलेज में कोई ईडीयट जाकर बैठे तो क्या समझेगा? कुछ भी नहीं। वेस्ट ऑफ टाइम करेंगे। यह ईश्वरीय कॉलेज है। इनमें नया आदमी कुछ समझ ना सकेंगे। 7 रोज़ कुआइन टाइम में बिठाना पड़े जब तक लायक बने। फिर भी कोई अच्छा आदमी रिलीजस माइंडेड है तो उनसे पूछना है– प०पि०प० तुम्हारा क्या लगता है? वो है आत्माओं का पिता और प्रजापिता भी तो बाप है। यह (प्वाइंट) बड़ी अच्छी है; परन्तु बच्चे इस पर अजन इतना हर्षित नहीं होते हैं। बाप कहते हैं तुमको नई–2 प्वाइंट्स सुनाता हूँ कि तुमको नशा चढ़े, किसको समझाने की युक्ति आए। फ..... का

में कितना मज़ा है। बाप कहते हैं मैं तुमको श्रीमत देता हूँ तो उसपर सबको चलना है। तुम जानते हो, कल्प–2 श्रीमत मिलने से ही भारत श्रेष्ट बनता है। भारत को ही पैराडाइज़ कहते हैं। सेन्सीबुल जो हैं वह समझेंगे बरोबर भारत ही प्राचीन था। भारत में ही गॉड–गॉडेज़ का राज्य था। तुम उनको समझा सकते हो, भारत जब हेविन था उस समय तो तुम थे नहीं। कोई भी नैशने(लिटी) नहीं थी। गॉड–गॉडेस का राज्य समझते थे। कृष्ण को भी कब लार्ड, कब गॉड कह देते हैं। श्री कृष्ण का ही मान है। लार्ड कृष्णा क्यों कहते हैं? क्योंकि उनको भगवान समझते हैं। गीता के भगवान ने सबको सद्गति दी है। नाम कृष्ण का डाल दिया है; इसलिए कृष्ण का बहुत नाम है। राम को कब झुलाते नहीं हैं। कृष्ण को कितना झुलाते हैं। उनके लिए ही कहते हैं कृष्ण सांवरा और गौरा। श्याम–सुंदर कहते हैं। राम को तो नहीं कहते हैं। भल उनको भी काला कर देते हैं; परन्तु नाम तो फिर भी कृष्ण का है ना श्याम–सुंदर। कैसे काले–2 चित्र बनाते हैं। काली माता बनाई है। कलकत्ते के आस–पास जहाँ–तहाँ काली के मंदिर होंगे। जगदम्बा के चित्र भी किसम–2 के बनाते हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि खुल गई है। यह कौन बैठ समझाते हैं? सतगुरु, सत बाबा, सत शिक्षक। उनका नाम है सत। सच बोलने वाला, सच जानने वाला। ग्रंथ सुखमनी में उसकी बहुत महिमा है। वो आकर सच खण्ड की स्थापना करते हैं और मनुष्यों को ऐसा सच्चा बनाते हैं। तुम सबको सच बनाते हो। सिक्ख लोगों को समझाना तो बहुत सहज है। वो अकालतख्त को भी मानते हैं। सत, अकाल का यह (साकार तन) तख्त है ना। किस तख्त पर बैठेंगे? क्या जिस पर राजाएँ आदि बैठते हैं? वो तो सच नहीं। सत श्री अकाल का तख्त है यह। बिचारों को कुछ पता नहीं है सत श्री अकाल किस तख्त पर बैठते हैं। आत्मा शरीर रूपी तख्त पर बैठती है। आसुरी मत पर उल्टा राज्य करते हैं, ईश्वरीय मत मिलने से सुल्टा राज करते हैं। उल्टे से दुख, सुल्टे से सुख। कितना बड़ा तख्त है। बाप आए इस तख्त पर बैठते हैं। .....
के आदि–मध्य–अंत की सब बातें समझाते रहते हैं। जिस बात को कोई जानते नहीं हैं। सब अपनी–2 बड़ाई में मस्त है। तुम्हारी मस्ती देखो कैसी है। तुम जैसे मास्टर नॉलेजफुल बन गए हो। चेतन में हो। अब तुमको सारी नॉलेज मिली है। जानते हो, टीचर पढ़ाते हैं तो साथ में आशीर्वाद भी होता है। माँगने की दरकार नहीं रहती। टीचर का काम है पढ़ाना। पढ़ना तेरा काम है। तुम्हारी बुद्धि इस नॉलेज से फुल होनी चाहिए। नाटक में सभी ऐक्टर्स बुद्धि में रहते हैं। इस बेहद के नाटक में भी मुख्य एक्टर देखो, बाप भी कैसे आते हैं। कैसे आए नॉलेज सुनाते हैं। कितने विघ्न पड़ते हैं। अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। कोई पति अपनी स्त्री लिए छोड़ भी जाते हैं, फिर बच्चा ऐसा नालायक निकल पड़ता जो माँ को भी दर–बदर कर देते। बाबा तो बहुत अनुभवी है। बाबा ने रथ भी अनुभवी लिया है। गाँ(व) का छोरा था। कृष्ण तो विश्व का मालिक था। उनको थोड़े ही गां(व) का छोरा कहेंगे। वह तो गौरा था। वैकुण्ठ का मालिक था। जब सांवरा बनता है तो फिर गांव में रहता है। तो कृष्ण ही फिर अंतिम जन्म में गांव का छोरा कैसे बना है अभी तुम जानते हो; इसलिए कृष्ण को गांव का छोरा कह दिया है। बाबा खुद वण्डर खाते हैं हम क्या थे, एकदम गांव में रहते थे। छोटेपन में तो बहुत सस्ताई थी। कौड़ियों से चीज़ें बेचते थे। 4 कोड़ी की सब्जी। कैनाल खोदने वाले लेबरर्स की इतवार दिन छुट्टी होती है। उसी दिन अनाज लेने आते थे। 10 आने मन बाजरी थी। इतवार दिन 5–6 आना कमाते थे। बड़े खुश होते थे। वहाँ से फिर चढ़ता गया। सभी व्यापार किए। ऐसी कोई चीज़ नहीं जिसका व्यापार ना किया हो। ..
... हीरों–जवाहरों का भी व्यापार किया, सो भी बड़े–2 राजाओं आदि साथ। बाबा बहुत अनुभवी है। भक्त भी पक्का था। 10–12 गुरु तो बेशक किए होंगे। छोटेपन में कृष्ण का भी बहुत पुजारी था। कृष्ण की मूर्ति देख बड़ा खुश होता था– वाह–2! कितनी अच्छी मूर्त है, कितने अच्छे बाल हैं। अभी बाबा को मालूम पड़ा है श्रीमत द्वारा। तुमको भी मालूम पड़ा है।
वण्डर

है! कितना बड़ा मालिक और फिर कितना नीचे आ जाते हैं। काम चिक्षा पर चढ़ने बाद फिर गिरते आए हैं। अभी तुम समझते हो कृष्ण को गांव का छोरा क्यों कहते हैं। बाबा खुद बतलाते हैं यह क्या था, अब क्या बने हैं। तत् त्वम। अब तुम समझते हो कहाँ की बात कहाँ ले गए हैं। श्याम–सुंदर का अर्थ भी अब समझा है। हम भी ऐसे ही थे। हमने भी कैसे 84 जन्मों का चक्कर लगाया है। अब नाटक पूरा होता है। अब जाते हैं घर। बड़ी सहज बात है। हम सुन्दर थे, फिर श्याम बने हैं, फिर सुंदर बनेंगे। यह श्याम–सुंदर का खेल है। 5000 वर्ष का यह खेल है। तुम भी सुन्दर बनते हो ना। स्वर्ग की(के) मालिक थे। अब नहीं हैं। फिर राज्य लेते हैं। कितना सहज है। बाप कहते हैं, माम् एकम् याद करते रहो और वर्से को याद करते रहो। सबको रास्ता बताओ। साधु–संत आदि सब बुद्धिहीन, अंधे हैं। उन्हों को रास्ता बताओ। ज्ञान अंजन सतगुरु दिया, अज्ञान अंधेर विनाश। गायन भी कितना अच्छा है। अंधेरे के बाद फिर सोझरा होता है। ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात। तुम्हारी बुद्धि में सारा ड्रामा का राज़ आ गया है। जानते हो, अभी हम संगमयुग पर बैठे हैं। बस, अब गए कि गए। अपने ..... बाप सन्मुख बच्चे–2 कहते हैं। शिवबाबा कहते हैं इस रथ द्वारा। वो ही ज्ञान का सागर है। यह ब्रह्मा होता जाता है। बाप है ज्ञान सागर तो यह मास्टर ज्ञान सागर बनेगा ना! ज्ञान सागर, पतित–पावन इस तन में है। खुद भी कहते हैं मैं इस तन में ही आता हूँ। नहीं तो किसके तन में जाऊँ, जो ब्राह्मण भी बनाऊँ और नॉलेज भी दूँ? क्या बैल में आऊँगा? आजकल बैल के मस्तक में भी शिवलिंग रखते हैं। तो ब्राह्मण भी ज़रूर चाहिए। ब्रह्मा कहाँ से आवे? ज़रूर एडॉप्टेड करना पड़े ब्राह्मणों को। अभी तुम ब्राह्मण बने हो। फिर देवता, क्षत्रिय.... बनेंगे। जिस्मानी ब्राह्मणों की बात नहीं है। वो है कुखवंशावली, तुम ब्राह्मण हो मुखवंशावली। तुम अच्छी रीति समझा सकते हो। ब्रह्मा द्वारा (स्वर्ग) की स्थापना। वो ब्राह्मण तो यह जानते नहीं। .... बाप बहुत अच्छी .... समझाते रहते हैं– बच्चे, जितना हो सके, और झरगुई–झगमुई छोड़ दो। शरीर निर्वाह अर्थ ..... धंधा आदि ..... बिलवेड मोस्ट बाप को याद करो। वो भी बच्चों को इतना प्यार करते हैं। मित्र–संबंधी आदि ढेर थे; परन्तु उन सबसे बुद्धियोग हटाए नए संबंध में कितना लव रहता है। सर्विसएबुल बच्चों को तो छाती से लगा दे। बहुत बच्चे सपूत हैं। बहुत अच्छी सर्विस करते हैं। अंधों की लाठी बनते हैं। दुखियों को सुखधाम का मालिक बना रहे हैं। तो बाप ऐसे बच्चों पर बलिहार जाते हैं। खुद सुख नहीं लेते हैं। कहते हैं तुम ही सुख लो। हम तो मुक्ति में जाते हैं। ड्रामा में पार्ट तुम्हारा ही है। वैकुण्ठ का मालिक हमको नहीं बनना है। वैकुण्ठ के मालिक तुम बनते हो। तो गौरे हो, फिर राज्य गँवाते हो तो सांवरे बनते हो। सांवरे और गौरे का अर्थ कितना बड़ा है। बाबा ने चित्र भी ऐसा बनाया है श्याम और सुंदर। 84 जन्म कैसे लेते हैं, फिर बाप द्वारा राजयोग सीखते हैं। वो लोग कृष्ण को जन्म–मरण रहित कह देते। तुम कृष्ण के 84 जन्म सिद्ध कर बताते हो। तुम इसलिए वो काट कर सिर्फ चित्र रख देते हैं। वण्डरफुल है! मनुष्यों की आसुरी बुद्धि। कितना पलटाना पड़ता है बुद्धि को। अब तुम्हारी बुद्धि पलटी हुई है। यह भी तुम बच्चे जानते हो, इस दुनिया की एण्ड है। तुम बोल सकते हो, इन बॉम्ब्स आदि से तो सृष्टि का विनाश हुआ था, तुम यह क्या कर रहे हो! यह सब वेस्ट आफ टाइम कर रहे हो। बचाव का कितना भी प्रबंध करेंगे; परंतु मरना ज़रूर है। कितने खौफनाक बनाय हैं। दुनिया की हालत देखो कैसी है! बाकी थोड़ा समय है। मौत आया कि आया कल्प पहले मुआफिक। सबके शरीर, धन–दौलत आदि सब मिट्टी में मिल जावेंगे। बाकी हम आत्माएँ बाबा पास जाए पहुँचेंगे। फिर अपनी राजधानी में जाए डांस करेंगे। बाकी यह जो आर्ट के चित्र दिखलाते हैं टेढ़े–बाके आदि, यह सब हैं फालतू। आज गुरुवार है। अच्छा, मात–पिता, बापदादा का सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ

Brahma kumaris, Diggi house,
Near S.M.S Hospital, Jaipur-4

जयपुर में सेन्टर बदली हुआ है
एड्रेस भेज रहे हैं।